

UP Board Notes Class 7 Hindi Chapter 24 बाल गंगाधर तिलक (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

सन् 1857 ई० की क्रान्ति भारतीय इतिहास में विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है। इस क्रान्ति के फलस्वरूप देश स्वाधीन तो नहीं हो सका; किन्तु इससे स्वाधीनता प्राप्ति के प्रयासों को बल मिला। बाल गंगाधर तिलक एक आदर्श शिक्षक और सफल पत्रकार थे। 1881 में तिलक की सामाजिक सेवा का दूसरा दौर चला। इन्होंने मराठी भाषा में 'केसरी' समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया। अँग्रेज़ी भाषा में 'मराठा' पत्र भी साथ ही निकलने लगा। 'मराठा' और 'केसरी' समाचार पत्रों में अँग्रेजों की अनुचित नीतियों और अत्याचारी का खुलकर विरोध किया जाता था।

कलकत्ता में होने वाले कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर एक सार्वजनिक सभा में गीता पर इनका भाषण सुनकर छात्रों ने इन्हें मानपत्र दिया तथा इनका निर्देशक प्राप्त करना चाहा। तब से वे 'लोकमान्य' कहे जाने लगे। इन्होंने धार्मिक उत्सव का आधार लेकर राजनीति की जड़ें मजबूत कीं। इस प्रकार तिलक को स्वदेशी आन्दोलन का सच्चा जन्मदाता कहा जा सकता है।

तिलक में असीम सहिष्णुता थी। देश के लिए इन्होंने बहुत यातना भोगी। जेल से छूटने के बाद ये। पुनः देश सेवा में लग गए। इन्होंने जनता को स्वशासन की प्रेरणा दी और होमरूल लीग की स्थापना की। वे देश में अपना शासन और अपनी व्यवस्था चाहते थे। कांग्रेस में तिलक को प्रभुत्व जम रहा था। तिलक पूर्ण स्वराज्य हेतु निरन्तर संघर्ष करते रहे। 1 अगस्त, 1920 को भारतीयों को पूर्ण स्वराज्य हेतु उत्प्रेरित कर भारत-माता के ये सपूते सदा के लिए सो गए। इनकी मृत्यु के अवसर पर जन समूह की बाढ़ को देखकर **विठ्ठलभाई पटेल ने कहा था- "राजनीति को आराम कुर्सी वाले राजनीतिज्ञों से जनता तक ले आने का श्रेय लोकमान्य तिलक को ही है।"** इनकी उँगली राष्ट्र की नाड़ी पर थी। ये जानते थे कि स्वाधीनता संग्राम में त्याग और कष्ट झेलने की क्षमता जनता में कितनी है; इसीलिए इन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन को आगे बढ़ाया। वे सच्चे अर्थों में भारत के निर्माता थे।"